जय जगत माता, जय जगत पिता, जय गुरुदेव

भगवान शिव की महिमा,उनकी लीलाएं, उपदेश और जीवन के लिएप्रेरणा स्रोत

योगेंद्र कन्नौजिया

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Yogendra Kannaujiya 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-298-3

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: June 2026

जय माता दी

जय   जय

जगत माता   ॐ   जगत पिता हूँ   卐

जय गुरू देव

मैं ही सब कुछ हूँ इन्सान मुझे क्या पहचानेगा

जगत माता का ज्ञान है

जय माँ शारदा

सृष्टि का सच्चार

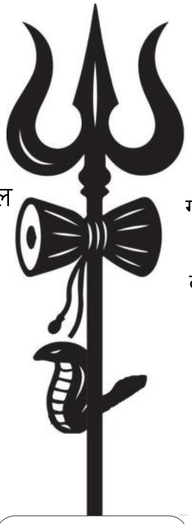

12

ॐ नमः शिवाय 卐

जय माता दी

1- हे माँ का अदभुत शक्ति- हे माँ शाराद शायद यह संसार तेरे ही हाथों से बना है माँ शारदा तेरा वर्णन और गरीमा कोई भी नहीं जानता। माँ एक पूरे ब्रम्हाण की महिमा द्वौ माँ तेरा रूप रेखा कोई भी नहीं जान सकता है।

हे माँ तुम्हारे हाथों में अभय ज्ञान का भण्डार है।

समय पर देती ज्ञान समय जाने पर ती लेती है है माँ

इस संसार की वाणी क्या है माँ कोई भी नहीं जान सका माँ।

2- हे माँ आज तक कोई भी नहीं जान सका इन्सान जन्म कितना ईस धरती पर होता है। माँ तेरे शिवा कोई भी नहीं जाSन सकता तू जगत की महिमा है माँ और जगत का पालन हार है।

हे माँ सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग गया, कलजुग चल रहा है यह कलजुग की महीमा इस किताब में चारों जुगों की महीमा है। माँ की भविष्यवाणी

जय माता दी

ज्ञान माता

पूरे ब्रम्हाण की शक्ति की महीमा है माँ तेरे बिना एक पत्ता भी नहीं हिलने वाला है माँ तेरे शक्ति से पूरा संसार बना

संसार एक उपज है माँ तेरा जो हम सब पे उपकार है भी

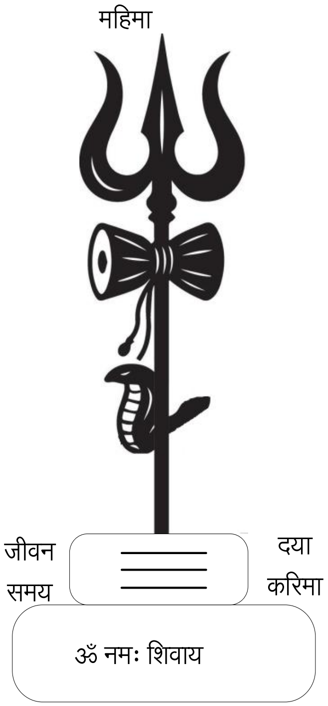

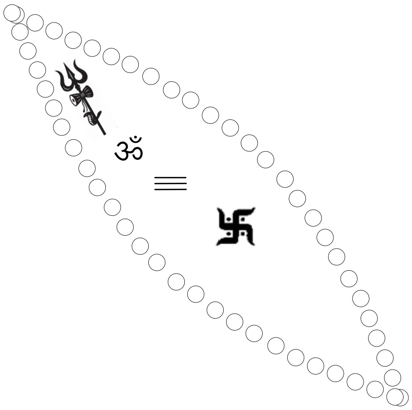

शिव शक्ति आदि शक्ति

3- हे माँ हे माँ तुम्हारे इस माया को कोई भी इन्सान नहीं समझ सकता है। माँ तेरा यह भविष्य वाणी हर इन्सान के समझ में नहीं आयेगा तू एक वर्तमान काल से है माँ।

4- हे माँ हे माँ तेरा अदभुत माया और विचार हर एक प्राणी नहीं समझ पायेगा माँ यह दुनिया एक माया नगरी में विलीन है माँ आदिशक्ति माता क्योंकि तेरा ही यह नगरी बनाई ही है माँ जुगो जुगो से एक है। माँ आदि शक्ति माँ तू संसार की रचईता है माँ जब समय आयेगा तो तू सब कुछ तू अपने पास ले लेगी माँ क्योंकि कलजुग की महिमा माँ तू कल भी और आज भी रहेगी जब तक यह किताब है इस संसार में है तक यह संसार है।

5- हे माँ हे माँ रमा भी है। क्षमा भी है दया भी मोक्ष भी हद प्राप्ति भी है ना है माँ तू गुणों की महीमा है भी माँ। मैं ही पूरा ब्रम्हाण हूँ मैं ही रचईता हूँ

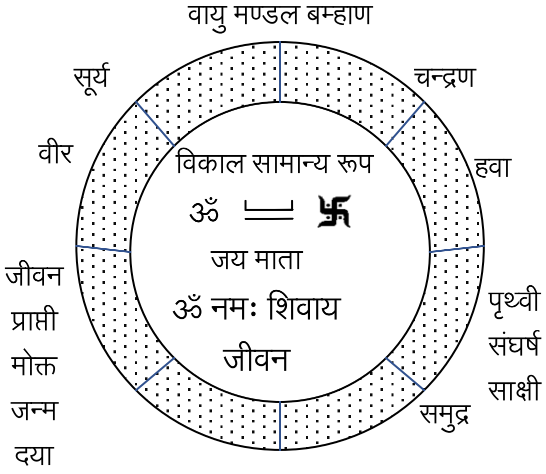

जब संसार नहीं था तब मैं था आज भी मैं ही हूँ मुझे पहचाने वाला नहीं पहचान सकेगे सिर्फ जो मेरा सच्चा भक्त होगा ना ही पहचान सकता है बाकी सब हवा के समान है वही सच्चा इन्सान होगा है वही परोपकार होता मैं परोपकार।

मैं ही सब

हे माँ यह संसार तेरे आगे क्या है माँ एक माया है माँ जो हमने अपने हाथों से बनाया है माँ संसार एक रमणी माया है हे माँ इस संसार का तू जगत माता है।

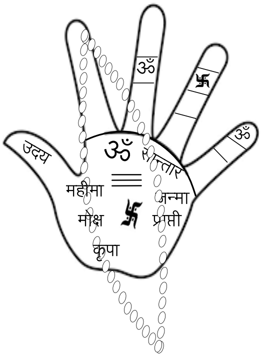

6- हे माँ हे माँ संसार में इन्सान का जीवन क्या है। माँ आदिशक्ति माता इसका अनिवार्य क्या है माँ इन्सान एक जीव आत्मा है। है जो मैंने अपने हाथों से बनाया है। इन्सान का आकृति और भविष्य मेरे हाथों में है जो जैसा करता है वह उस फल फल भागी होता है।

7- हे माँ हे माँ संसार के सम्पूर्ण स्वामी का रचना का अनिवार्य क्या है। माँ संसार धीरज है और धैर्य भी है। उपकार भी है। वर्णन भी है और विक्राल भी है और अजय भी है जो इस संसार में है में विरजमान भी है।

8- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

9- हे माँ हे माँ शारदा इस संसार में तेरी ही रमणीय माया है माँ आदि शक्ति माँ जब यह संसार नहीं था तब माँ तेरा ही उत्पन्न हुआ या माँ तू एक माया शक्ति है माँ संसार एक ग्रह है। माँ आत्मा के समान एक समान्तर है माँ जैसे आकाश में कोई आकार नहीं होता है वैसे आत्माओं में आकार नहीं होता है माँ तेरा वर्णन एक माया के समान है माँ।

10- हे माँ हे माँ आकाश के आकाक्षाओं के बारे में कोई भी प्राणी आज तक कोई भी नहीं जान सका आकाश एक सक्षम शक्ति है। माँ आका में माँ तेरा ही परोपकार है माँ शायद इस जुग में लोग क्या जानेगे संसार जबसे बना है तब से सभी प्राणियों का भी जीवन बना है। यह सब बेटा ही माया माँ आदिशक्ति माँ

ब्रम्हाण का रचना भी तुमने ही किया है माँ आदिशक्ति माँ।

आकाश वर्णन मेरा जीवन के शैलियों का वर्णन कर संसार क्या है एक माया है। शास्त्रों के द्वारा रचईता हुआ है माँ जो तुमने किया हे माँ।

पूरा ब्रम्हाण हु माँ मेरा भक्त कर सकता है बाकी कोई भी नहीं बाकी सब देखावा है माँ। आकाश के नौलीयो के बारे का वर्णन क्या कोई जानेगा आकाश का रचना बहुत बडा है। आकाश के अन्दर बहुत कुछ और है।

11- हे माँ जो संसार में जन्म लेता है माँ के कोख में उसे जन्म कहते है और जो पृथ्वी से प्रगट होते है उसे अवतार कहते है। माँ तू माँ पृथ्वी प्रगट हुई और पृथ्वी में समा गई उसे अवतार कहते जैसे नरसिंह अवतार गोरख बाब का अवतार हुआ हम वह लोग माँ के पेट से नहीं पैदा हुये हम उन्हें अवतार कहते है।

12- हे माँ संसार एक दिन माया के समान समा जायेगा जब तक यह किताब पढने वाले रहेगे तब तक संसार रहेगा नहीं तो यह संसार एक दिन मैं समाप्त कर दूंगा यह जगत माता जगत पिता का रमणी माया सै जो उन्होंने अपने हाथो से बड़े प्यार से बनाया है। इंसान क्या है। इंसान एक माया के समान है। माँ इस संसार मे जो कुछ वह मैंने दिया है। समय आने पर सब कुछ मैं तो लूगी यही मेरी महीमा और गाथा है। मेरे आगे किसी का भी शक्ति नहीं चलने वाला है और मैं आदि शक्ति हूँ।

13- हे माँ हे माँ दिवाली से शुभ दिन होता है। माँ आदिशक्ति माता दिवाली से दानवीर भी होता है। माँ जी सके जीवन में दया और परोपकार है। वह इन्सान धनवान होता है। माँ आदिशक्ति तेरा जो वर्णन काव्य है। माँ आदि शक्ति माता अगर काल भी आता है वह तेरे महीमा से वह चला जाता है। माँ आदिशक्ति माता तेरे कृपा से यम से छुटकारा मिला जाता है। माँ आदिशक्ति माँ क्योंकि तू जगत माता है। माँ आदिशक्ति माँ।

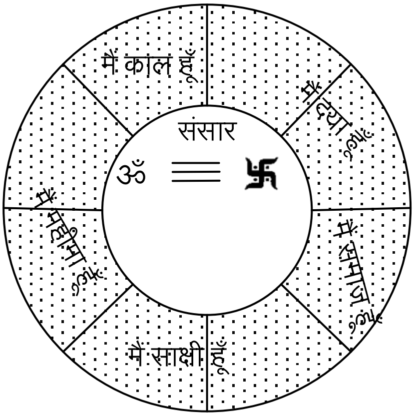

मैं ही जगत माता हूँ मैं ही जगत पिता हूँ मेरे विपरीत कुछ नहीं होने वाला है। मैं संसार हूँ। मैं पूरे वायु मण्डल का जगत माता जगत पिता हूँ आकाश पाताल पृथ्वी वायु अग्नि सूर्य और चन्द्रमा तारे और हवा जीव जन्तु प्राणि। मैं समय हूँ मैं काल मैं मोत मै मैं माय हूँ मैं अन्धकार में विराजमान हूँ मैं आदर्श हूँ मैं कृपा भी हूँ पूरा संसार मेरे हाथों में है मैं जब चाहूँगी मैं समाप्त कर दूंगी मगर नहीं जब जब पृथ्वी पर मेरे भक्त आते है तब तब भक्तों द्वारा ही इस संसार का उद्धार होता है। इस संसार में सूरज एक ही और भक्त एक ही पैदा होता है और बाकी सब दिखावा और जैसे इन्सान जन्म लेता वैसे समाप्त हो जाता है वैसे ही यह संसार समाप्त हो जायेगा।

14- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

15- हे माँ आदिशक्ति माता जब तू से तू पूरा सृष्टि बनाया है तब से तू ही है। हे माँ आदिशक्ति माता आज भी है और कल भी रहेगी तू भी रहेगी तेरा भक्त भी रहेगा भक्त एक परोपकार होता है जो तेरे महीमा से सब पे उपकार होता है।

16- हे माँ संसार क्या है एक आकार संसार एक निर्जीव आत्मा है माँ। हे माँ आकाशा का रचना कैसे हुआ है आज तक किसी ने नहीं जाना है। माँ आकाश मायावी रचना है। उसका अक्स क्या है माँ आकाश में कितना शक्तियाँ है माँ उसमें कितान तात्पर्य है। माँ आकाश के अन्दर वायुमण्डल का रचना है जो आज तक किसी न जाना है 52 हजार करोड़ शक्तियाँ है जो आज तक किसी ने नहीं जाना जो मेरा भक्त कलजुग में होगा वही जानेगा और बाकी कोई भी नहीं क्योंकि मैं ज्ञान मैं अपने भक्त को देती हूँ वही जान सकता है वही मेरे हृदय में वास निवास करता है।

17- हे माँ हे माँ जगत का पालन हार करने वाली माँ तू सदैव है और सदैव रहेगी तेरे आगे और कुछ भी नहीं माँ आदिशक्ति माँ।

18- हे माँ आकाश का आकार बहुत बड़ा है। माँ आदिशक्ति माँ जो की तेरे हाथों में समाया हुआ है। हे आदिशक्ति माता आकाश के अन्दर जितने शक्तियाँ है उन सबकी मैं माँ हुँ मेरा ही दिया हुआ शक्ति है प्रत्येक प्राणियों की मैं माँ हू जन्म देती हूँ तो समय आने पर मैं अपना सन्स ले लेती हूँ मेरे महीमा का गाथा इस संसार में आज तक कोई नही जान सका न जानेगा मैं आदिशक्ति स्वरूप हूँ मेरा हर रूप है। मैं काल हूँ मैं माया भी मैं ज्ञान भी मैं सागर भी हूँ मैं सत्य भी मैं अभय भी हूँ मैं साक्षी भी हूँ मैं गंगा भी मैं धरती भी हूँ मैं वायु मण्डल हूँ मेरे हाथों पूरा संसार मैं संसार की शक्ति हूँ।

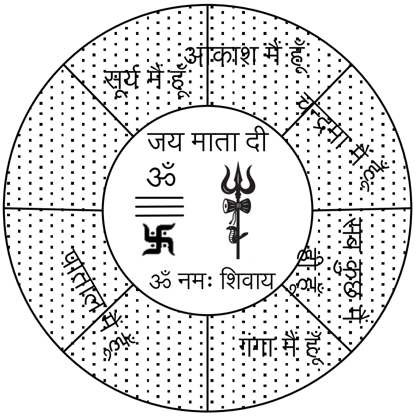

19- हे माँ ग्रह हे माँ वायु मण्डल एक ग्रह है। माँ आकाश का आकार माँ आदिशक्ति माँ माता तेरा ही बनाया हुआ रमणी माया है। माँ आदिशक्ति माता।

20- हे माँ जगत का पालन हार करने वाली तू ही है माँ। मैं जगत पिता हूँ मैं जगत माता हूँ पूरे ब्रम्हाण की शक्ति इस किताब के अन्दर समा चुका है। यह किताब साधारण

किताब नहीं है। जो जगत माता जगत पिता वह अच्छा करता है जो पृथ्वी पर जन्म लिया वह माँ के पेट समा गया एक माँ जन्म देती है। दूसरे माँ इन्तजार करती है। यही संसार का नियम है। इसलिये मेरा नाम आदिशक्ति पड़ा है मैं ही बेडा पार हूँ मैं ही सब कुछ हूँ।

21- हे माँ हे माँ तू शक्ति विद्या और माया में निपुण है। माँ आदिशक्ति माँ तेरे बारे में हम नहीं समझ सकते है माँ आदिशक्ति माँ।

22- हे माँ तेरा यह रमणीय माया और दया एक मायावी शक्ति है। माँ शारदा शायद संसार से पहले तू ही थी माँ संसार एक अनमोल रत्न है जो तूमने अपने आपो से बनाया है। संसार नहीं था तब मैं ही थी मैं आदिशक्ति हूँ मेरे ही हाथ से पूरा ब्रम्हाण का रचना हुआ है। समय आने पर सब कुछ मैं समाप्त कर दूँगी क्योंकि समय समय पर मेरे भक्त संसार में जन्म लेते रहते है। समय एक समान्तर युग है।

23- जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

24- मैं ही ऊ कार हूँ मैं है परोपकार हूँ 52 हजार शक्तियों की शक्ति की महिमा का गाथा और आकाश एक आकार है आकाश एक मायावी शक्ति है। आकाश के अन्दर बहुत कुछ समया हुआ है। आकाश के अन्दर बहुत कुछ समाया हुआ है। आकाश

के अन्दर एक दिव्य शक्ति है। उसी का नाम आदिशक्ति पड़ा है। आग पानी हवा पृथ्वी सूरज चाँद तारे इन सब से जीवन बना है। इसे कहते आदिशक्ति वायु मण्डल के अन्दर कितने शक्तियाँ है। पृथ्वी जो आने वाले क्या जानेगे अपने जन्म के बारे में पता नहीं है।

25- हे माँ हे माँ तू एक तेरा शीतल की तरह ममता है। माँ आदिशक्ति तेरे मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलने वाला है माँ आदिशक्ति।

26- हे माँ हे माँ जो आकाश के अन्दर शक्तियाँ है। वह तेरा आकार है। हे माँ आदिशक्ति माँ तेरा ही नाम आकार है। आकाश का कोई भी अन्त नहीं है और तेरा भी अन्त नहीं है। माँ तू कभी भी अपना माया बदल सकती है। माँ आदिशक्ति तेरा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। माँ आदिशक्ति माता।

27- हे माँ हे माँ जब संसार नहीं था तब तेरा माया था माँ उस समय अन्धकार ही अन्धकार पूरे ब्रम्हण के अन्दर अन्धकार ना तू अपने ही जोत से इस संसार रोशनी दिया है। इस पृथ्वी पर तेरा जोत जलता है और जलता रहेगा जब तेरा जीत है तब तक यह किताब पडा रहेगा संसार का यह नियम है माँ।

28- हे माँ पूरे ब्रह्माण्ड में 12 लोक है जो कि किसी को आज तक किसी कोसी को पता नहीं जैसे इन्सान का शरीर बना है। वैसे ब्रह्माण्ड बना है माँ आदि शक्ति माता।

29- हे माँ हे माँ तू सदाचार और सत्य की गाथा की महिमा है। माँ आदिशक्ति मता तू जुगो जुगो से चली आ रही है माँ शारदा।

30- हे माँ हे माँ संसार में जो कुछ कुछ भी है। माँ तेरा ही बनाया हुआ है। माँ आदिशक्ति माता तेरा यह रमणीय माया कोई भी नहीं जान सकता है। माँ आदिशक्ति माता।

31- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

सतजुग
त्रेता युग
द्वापर
कल जुग
की
महिमा

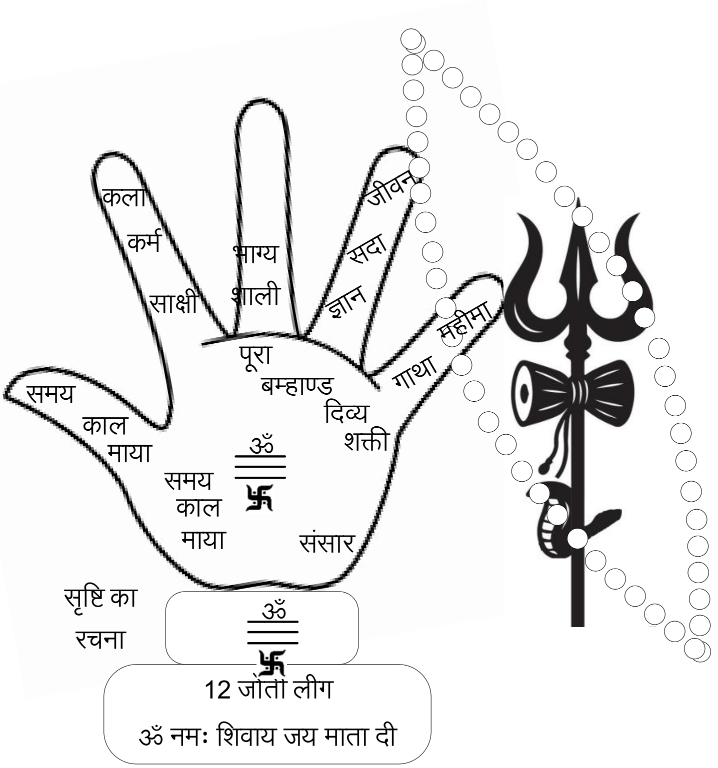

सत्य की महिमा

32- हे माँ पूरे ब्रम्हाण की महिमा माँ के हाथो में है। हे माँ संसार तुम्हारे ही हाथों से बना है। माँ आदिशक्ति माँ जय माता दी। सृष्टि का अन्त सत्य की महिमा परोपकार है मैं तेरा नाम आदिशक्ति है।

33- हे माँ हे माँ जब तक है और संसार है तब तक दर्पण रहेगा जब तक संसार है। तब तक तेरा भक्त है। जब संसार नहीं रहेगा तब भी तेरा भक्त रहेगे माँ क्योंकि तेर भक्त तुम्हारे भक्ति से अमर हो जाते है। माँ आदिशक्ति माँ कोई भी संकट आता है तो माँ तू अपे भक्त का संकट दूर करती है। माँ आदिशक्ति माँ।

34- हे माँ हे माँ संसार एक जीव आत्मा है। माँ आदिशक्ति माँ तू जो अपन आयी से जो बनाया है कलजुग की महिमा का लास्ट दिन चल रहा हम जब तक यह ग्रन्थ है तक यह संसार है माँ आदिशक्ति माँ।

35- हे माँ जय माँ

36- मैं पूरा बम्हाण्ड हुँ मैं सब कुछ हूँ मैं मेरा अन्त कोई भी नहीं जान सकता है सिर्फ मेरा भक्त ही जान सकता है सदा संसार मेरे हाथो में है जब चाहूंगी, तब मैं समाप्त कर दूंगी मैं आकृति पुष्प कमल तल के नीचे भी महिमा का संसार है। वह संसार अगल संसार है वहाँ की आकृति भी अलाग है। वायु मण्डल का रचना है यह प्रथम सामान्य उपकार परोपकार घनिष्टा जीव सामान्य।

37- हे माँ हे माँ जीवन क्या है। माँ जीवन एक संघर्ष है। जीवन में जो संघर्ष किया उसका जीवन मृत्यु लोक से उद्धार हो गया है।

38- हे माँ हे माँ जब संसार में जब अन्धेरा था तब तू अपने हाथ से उजाला किया है माँ तब तेरा नाम ज्वाला मुखी पड़ा है माँ आदिशक्ति माँ

39- हे माँ जब आकाश के अन्दर अन्धेरा ही अन्धेरा था तब तू अपने माया शक्ति से तू आकाश को रोशनी दिया है। माँ आदिशक्ति माँ तेरे ही महिमा से सूरज चमकता है। कलजुग खत्म होने तक तू अपना शक्ति तू अपने हाथों में तू ले ले लेगी माँ आदिशक्ति माता।

40- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

41- हे माँ

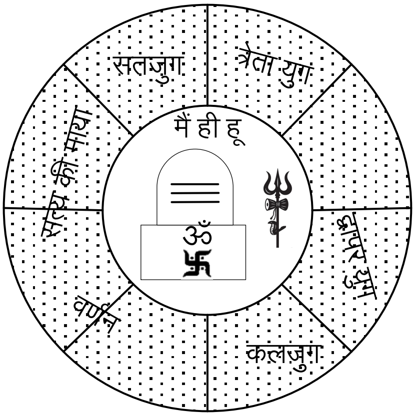

जय माता दी

ॐ ≡ 卐

शिव शक्ति आदि शक्ति माँ

ॐ ≡ 卐 मैं महाकाल भैरो भी हूँ

ॐ ≡ 卐 मैं समय काल भी हूँ

ॐ ≡ 卐 मैं परोपकार भी हुँ मैं

ॐ ≡ 卐 मैं साक्षी भी हु मैं

ॐ ≡ 卐 आकाश का आकार एक माया के समान है। सूरज एक सुख के समान है चन्द्रमा का शीलत के तरह है। समुद्र

ॐ ≡ 卐 सूरज

ॐ ≡ 卐 चन्द्रमा

ॐ ≡ 卐 ध्रुव तारे

ॐ ≡ 卐 आकाशगंगा

ॐ ≡ 卐 हवा

ॐ ≡ 卐 अग्नि

ॐ ≡ 卐 पृथ्वी

ॐ ≡ 卐 गंगा

ॐ ≡ 卐 पाताल

42- हे माँ हे माँ आदिशक्ति माँ तेरा गाथा एक माया के समान है। माँ आदिशक्ति माँ तुम्हारे विचार भाव के समान कोई भी नहीं है माँ आदिशक्ति माँ।

43- हे माँ हे माँ आदिशक्ति माता तू एक कमल के समान है माँ आदिशक्ति माँ तुम्हारा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। माँ आदिशक्ति माँ

44- हे माँ हे माँ बेटे का रिश्ता जन्मो जमान्तर तक रहता है रिश्ता एक ममता का रूप है माँ जो तू अपने बच्चों के दुख सुख में हाथ बंटाती है मां आदिशक्ति माँ

45- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

46- हे माँ हे माँ शक्ति स्वरूपा तुम्हारा अनेक रूप हे माँ काम एक है माँ आदिशक्ति माता क्योंकि तू संसार की रचना तुमने अपने हाथो से ही बनाया है माँ आदिशक्ति माँ

47- हे माँ हे माँ तू सदा शिव की शक्ति तू है माँ आदिशक्ति माँ तू संसार की रमणीय माया है। माँ कलजुग का जब समय खत्म हो जायेगा तो तेरा शक्ति तेरेपास आ जायेगा माँ आदिशक्ति माँ

48- हे माँ हे जगत माता जगत पिता जब तक यह किताब है तब तक यह संसार पड़ा रहेगा माँ आदिशक्ति माँ संसार एक रमणीय माया है।

49- हे माँ संसार में मुझे आज तक कोई भी नहीं पहचान सकता है। मेरा रूप अनेक प्रकार का है। मुझे पहचानने वाले हजारों जन्म लेते है। तो भी नहीं पहचान सकते है। वह अपने को नहीं पहचान सकते तो मुझे क्या पहचानेगे मुझे सिर्फ मेरा भक्त पहचान सकता है। जैसे फूलो कराडो फूल होता है। वैसे कमल होता है। वैसे मेरा भक्त होता है।

50- हे माँ हे माँ पूरा बम्हाण्ड तेरा आथो मैं है। माँ आदिशक्ति माँ यह तेरा उज्जवल एक माया है। माँ तू एक सृष्टि की रचईता है माँ आदिशक्ति माँ

संसार एक विलीन शक्ति है माँ जो तू अपने माया से बनाया माँ सूरजी की शक्ति मैं ही हूँ चन्द्रमा की शक्ति मैं ही हूँ। पृथ्वी शक्ति मैं ही हूँ गंगा की शक्ति है मैं ही हूँ समुद्र की शक्ति मैं ही हूँ पाताल की मैं ही हूँ हवा की शक्ति मैं हूँ चांदे तारों की शक्ति मैं हूँ पूरे जीव जन्तू की शक्ति मैं ही हूँ मेरा नाम आदि शक्ति है।

पूरे बम्हाण्ड की शक्ति मैं ही हूँ मेरा नाम आदिशक्ति है। आकाश के अन्दर जितना शक्तियाँ है वह सब मेरे हाथों से बनाई हुई है।

51- हे माँ हे माँ शक्ति स्वरूपा जो भी लिखा है वह सत्य की महिमा का गाथा है। माँ आदिशक्ति माँ तुम्हारा वर्णन कोई भी कलजुग में वर्णन नहीं कर सकता है। माँ तुम्हारे साथ काल भैरव रहते है। माँ आदिशक्ति माँ

52- हे माँ हे माँ संसार शक्ति स्वरूपा तुम्हारा जो करतब है माँ वह मैं पालन कर रहा हूँ माँ आदिशक्ति माँ

53- हे माँ हे माँ दिन भी तू है माँ रात भी तू है। माँ तू अपने नियम के अनुसार चलती है। माँ हे माँ आदिशक्ति भी तुम्हारा शक्ति पूरे ब्रम्हाण में है माँ आदिशक्ति माँ

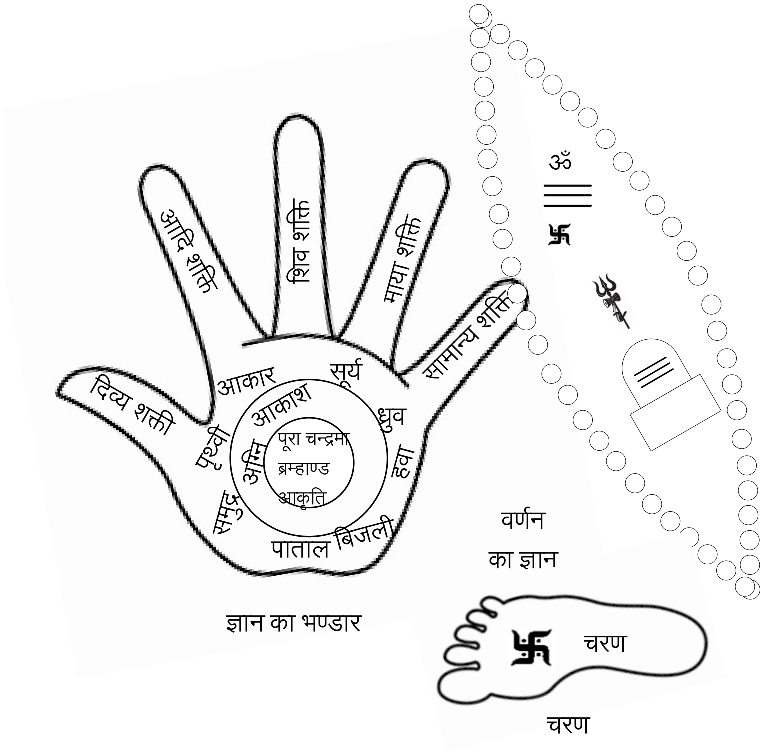
आदि शक्ति
शिव शक्ति
माया शक्ति
सामान्य शक्ति
दिव्य शक्ती
आकार
सूर्य
आकाश
ध्रुव
पृथ्वी
अग्नि
पूरा चन्द्रमा
ब्रम्हाण्ड
आकृति
हवा
समुद्र
पाताल
बिजली
ज्ञान का भण्डार
ॐ
वर्णन
का ज्ञान
चरण
चरण

54- हे माँ हे माँ तू अपने भक्तों को तू जीवन दान देती है। माँ आदिशक्ति माँ जो सच्चा श्रद्धा से भक्ति करता है माँ उसका जीवन हर जन्म से मुक्त हो जाता है। माँ आदिशक्ति माँ उस इन्सान का आकाल मृत्यु नहीं होती है क्योंकि उनके साथ काल भैरव और आदिशक्ति माँ रहती है माँ।

55- हे माँ मैं दिव्य शक्ति हूँ मैं संसार का संचालक हूँ आकाशके अन्दर मेरा निवास है मैं दिव्य शक्ति हूँ मेरा वर्णन कोई भी नहीं जान सकता है मैं एक आकार रूप है मेरा कोई भी अन्त नहीं है। मैं कभी भी जन्म नहीं लेता हूँ जब समय आता है तो जन्म मैं पृथ्वी पर लेता हूँ मुझे कोई भी प्राणी नहीं पहचान सकता है।

56- हे माँ हे माँ आकाश क्या है माँ आकाश एक दिव्य शक्ति का रचना है वह मैं ही हूँ आकाश का अन्त नहीं है। उसी तरह मेरा भी अन्त नहीं है।

57- हे माँ हे माँ जो जैसा कर्म करता है वह वैसा फल का भागी होता है माँ आदिशक्ति माँ।

58- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

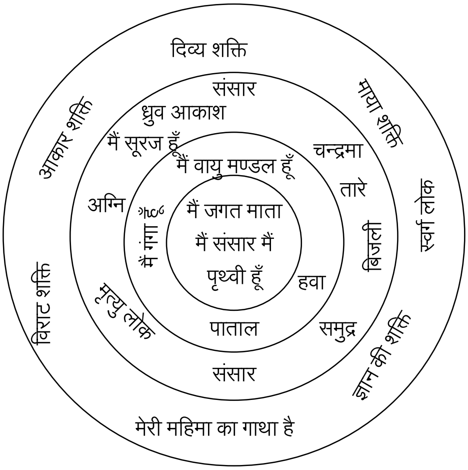

59- हे माँ हे मां तू एक जगत माता है। तू आकाश के अन्दर तेरा निवास है माँ सूर्य से 36 हजार करोड़ किलो मिटर से दूर है माँ वायु मण्डल तू वहाँ निवास करती है। माँ आदिशक्ति माँ वहां कोई नही जाता है। माँ सिर्फ तेरा भक्त जाता है। माँ क्योंकि माँ बेटे का रिश्ता है।

60- जगत माता जगत पिता

ॐ

सतजुग, त्रेता युगा, द्वापर युग कलजुग की महिमा कलजुग में किसी की शक्ति नहीं चलने वाली है। जन्म सबका हुआ है। मगर कलजुग में नहीं सब मेरा ही अंश था सब का अंश मेरे सीने में समा चुका है। मैं सबका जगत माता जगत पिता हूँ जैसा जुग होता है वैसा जन्म होता है कलजुग में कोई भी नही जो भी हूँ मैं ही हूँ। संसार एक रमणीय माया है। मां इस किताब के अन्दर क्या शक्ति है। वह किसी को पता नहीं चलेगा जो उसका पालन करेगा उसकी को पता चलेगा।

61- हे माँ हे माँ पर कलजुग की महिमा है। इसमें सतजुग त्रेता जुग द्वाप जुग कलजुग तक की महिमा है। यह महिमा पूरे संसार की है। मां क्योंकि तू अपने अपने हाथों से संसार का रचना किया है। मां मैं परोपकार मैं मार्ग दर्शन हूं मैं साक्षात हूँ मैं धीरज हूँ मैं उपयोग हूं मैं सदाचार हू मैं एक गुणवान हू मैं एक विद्यावान हूँ मैं एक गंगा के तरह दयावान भी है।

63- हे माँ हे माँ संसार एक संस्कार है माँ जो कि तू एक नियमित अनुसार तू अपने हाथों से बनाया है माँ।

64- हे माँ हे माँ कलजुग जाने वाला है माँ सतजुग आने वाला है। सत्य की महिमा सतजुग से चला आ रहा है। सत्य की विजय होती है। समय तो लगता है माँ आदि शक्ति माता मगर विजय सत्य की होती है।

65- हे माँ हे माँ आकाश से ऊपर 36 हजार करोड़ उपर तुम्हारा निवास है माँ वहाँ कोई भी नहीं जाता है। माँ जो सच्चे दिले से जो भक्त तुम्हें पुकारता है माँ वही जाता है। माँ आदिशक्ति माता

66- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

67- हे माँ भाग्यशाली जुगो जुगो से चला आ रही हूँ वर्तमान काल से मैं आज भी हूँ और कल भी रहूंगी मेरा नाम आदिशक्ति।

68- हे माँ हे माँ सनातन धर्म तुमने ही बनाया है माँ सनातन माने संसार सत्य से संसार बनाया है। माँ आदिशक्ति सत्य से शरीर बनाया है माँ आदि शक्ति माँ।

69- हे माँ धरा रूप धरती का है माँ रूप धरा है का धीरज हे माँ रूप धरा है। धनवान का हे माँ मेरा जन्म धोबी वंश में जन्म हुआ है। माँ मुझे कोई भी नहीं पहचान सकता है। हाँ धनुष भी होता है। घ से घघीस भी है जो शिव के गुरू है। माँ सीने के हसुली से धनुष बना है और उनके पैर का बज्र बना है। शिव का धनुष आज भी वायु मण्डल में है। माँ आज भी बज्रपात पड़ता है उनके गुरू का देन है।

70- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

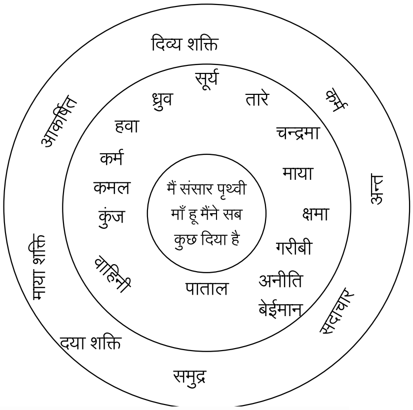

71- हे माँ

ॐ ≡ 卐 जय माता दी

ॐ ≡ 卐 ॐ नमः शिवाय

मैंने संसार बनाया है मैं ही उस संसार का अन्त करूंगा जो सच्चे लोग हैं वही इस संसार में बचेंगे । बाकी सब का अन्त होगा समय आ गया है इस संसार में मैं आज भी हूँ कल भी रहूंगा मैंने इन्सानियत बनाया है सैतानीय नहीं इन्सान दोपल पल के लिये आता है मगर मुझे भूल जाता है।

72- हे माँ हे माँ उदय तुम्हारे ही महिमा से होता है माँ और शाम भी तुम्हारे ही महिमा से होता है माँ आदि शक्ति माता।

73- हे माँ जय माता दी

74- हे माँ हे जगत माता तुम्हारी महिमा और मर्यादा अपरमपार है माँ आदिशक्ति माँ तुम्हारी महिमा और गाथा जुगो जुगो से है माँ आदिशक्ति माँ।

75- हे माँ हे माँ जब सतजुग की रचना हुई थी तब तू थी आदिशक्ति भी सतजुग क्या है। माँ सतजुग माने एक इन्सानियत होता है माँ है माँ तू सत्य से सारा सृष्टि बनाया है माँ आदिशक्ति माँ।

76- हे माँ जगत ॐ जय माता दी 卐 माता ॐ ≡ 卐

जगत ॐ नमः शिवाय 卐 पिता

ॐ ≡ 卐

मैं पूरे संसार में विराजमान हूँ मुझे कोई भी नहीं समझ पायेगा मेरा रूप अनेक है। मैं पूरे संसार का जगत माता जगत पिता हूँ मेरा ही यह दुनिया बनाई हुई है मेरा अन्त कोई भी नहीं जान सका न जान पायेगा। मैं पूरे संसार का अन्त एक दिन करूंगा संसार में जितना पाप बढेगा उतना ही मेरी शक्ति बढेगी मेरा जन्म परोपकारी होता है। मगर कोई भी इन्सान नहीं समझ पाता है।

77- हे माँ हे माँ परमात्मा एक आत्मा बनाया माँ एक तू गंगा का रूप धारण किया है माँ जो की सदैव तू अपने शक्ति से सभी आत्माओं का प्यास बुझाती है माँ

78- हे माँ धरा रूप धरती का तेरी ही मिट्टी से बना है। इन्सान तेरे ही मिट्टी में समा जाता है। इन्सान इन्सान कहता है कि मैं सब कुछ हूँ मगर माँ तुम्हारे आगे कुछ भी नहीं है माँ।

79- हे माँ धरा रूप अग्नि का अग्नि एक माया के समान है अग्नि एक विक्राता रूप है जो आदिशक्ति माता नाम पड़ा है।

80- हे माँ धरा रूप सूरज का जो मैं अम्बर में पडा हूँ सूरज एक जीवन काल का रचना का उपग्रह है। माँ आदिशक्ति माँ जो तुमने अपने हाथों से बनाया है माँ आदिशक्ति माँ

81- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

82- हे माँ हवा तेरा ही बनाया हुआ माँ आदिशक्ति माँ समय आने पर तू नजरबन्द कर देगी माँ आदिशक्ति माँ आदिशक्ति अनापी भी है माँ शारदा

83- हे माँ हे माँ घटवारी माँ है माँ तेरा वर्णन घाट से होता है माँ तेरा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। माँ क्योंकि त घर घर में बसी है माँ

84- हे माँ हे घटवारी बाबा तू घाट पर बसे हो बाबा तुम्हारे महिमा का अन्त नहीं है। मैं धोबी वंश में जन्म लिया है घटवारी माँ घटवारी बाबा तुम्हारा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। इन्सान का जब अन्त होता है तो उसी घाट पर जाता है इसलिये मेरा नाम घटवारी माँ घटवारी बाबा पड़ा है।

85- हे माँ धरा रूप अम्बर का है माँ धरा रू सूरज का है माँ धरा रू चाँद का हे माँ धरा रूप हवा का है माँ धरा रूप अग्नि का है माँ धरा रूप गंगा का है माँ धरा रूप समुद्र का हे माँ धरा रू पृथ्वी का धरा रूप पाताल का है माँ धरा रू सभी आत्माओ का हे माँ धरा रू शरीर का

86- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

87- हे माँ जय माता दी ॐ ≡ 卐 इस किताब पर किसी की नहीं चलेगी जो चाहेगा उसका अन्त होगा किसी की शक्ति नहीं चलेगी इस पर पूरे सृष्टि की शक्ति है और अन्त भी है। भुतकाल जन्म काल प्रेत काल अन्त काल समय काल माया काल भैरव काल मृत्यु काल काल

मैं ही हूँ सब कुछ मेरा वर्णन मेरा अन्त कोई भी नहीं जान सकता है।

88- हे माँ हे माँ सच्चे दिन की भक्ति है। माँ आदिशक्ति माँ जो भी इन्सा इस दर पर आये होता आये और हंसता हुआ जाये माँ आदिशक्ति माँ

89- हे माँ हे माँ तू तो अमर है। माँ आदिशक्ति माँ मैं भी अमर हूँ और मेरा परिवार भी अमर रहेगा माँ तुम्हारे हम भक्ति से जो भी तुम्हारे दर पे आयेगा माँ सच्चा श्रद्धा से उसका मनोकामना पूरा करन जिसके मैं हाथ रखूंगा उसका उद्धार हो जायेगा माँ

मै जगत
माता
जगत
पिता हूँ

शिव शक्ती ॐ मैं परोपकार
आदि शक्ति 卐

90- हे माँ हे माँ तुम्हारे चमत्कार और महिमा के बारे में हर एक मनुष्य नहीं जानता है माँ इसलिये यह कल जुग चल रहा है माँ आदिशक्ति माँ

91- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

92- हे माँ हे माँ जगत नारायणी माता पूरा संसार तुम्हारे हाथों में है माँ जो तू ही पृथ्वी का रूप पकड़ा है। माँ आदिशक्ति माँ

93- हे माँ हे माँ तू शान्ति स्वभाव की तू अच्छी है। माँ और दयालू भी है माँ आदिशक्ति माँ

94- हे माँ हे माँ तू पूरे ब्रम्हाण को तारती है माँ तुम्हारे महिमा का अन्त नहीं है माँ तू कोई भी रू बना सकती है माँ

95- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

96- हे माँ हे माँ चारो जुगो का वर्णन तुम माँ अपने हाथो से बनाया है। माँ आदिशक्ति माँ तुम्हारे कृपा सब पर है। माँ आदिशक्ति माँ

97- हे माँ हे माँ जगत नारायणी माता हे जगत नरायण पिता भी लिखा हूँ सच्चे से लिखा हूँ आगे जो करना है वह आप लोग करेगे जगत माता जगत पिता मैं क्या कर सकता हूँ जो मेरा कर्तव्य था वह मैंने पूरा कर दिया है माँ।

98- हे माँ हे माँ संसार एक अनमोल रत्न है । माँ जो आप ने बनाया है माँ आदिशक्ति माँ

99- हे माँ हे माँ सदा शिव है और माँ आदिशक्ति है। माँ समय आने पर माँ आदिशक्ति माँ जो कुछ तू दिया है वह सब कुछ तू अपना तू ले लेगी आदि शक्ति माँ

100- हे माँ जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

101- हे माँ ॐ जय जगत माता, जय जगत पिता

मैं अन्त हूँ मैं काल हूँ मैं मृत्यु भी हूँ मैं अमर हूँ। मैं सब में हूँ रमा भी हूँ और क्षमा हूँ और दिन और रात भी और सुबह और शाम भी हूँ।

सत्य की महिमा का गाथा है

माता के महिमा का वर्णन है।

ॐ ≡ 卐

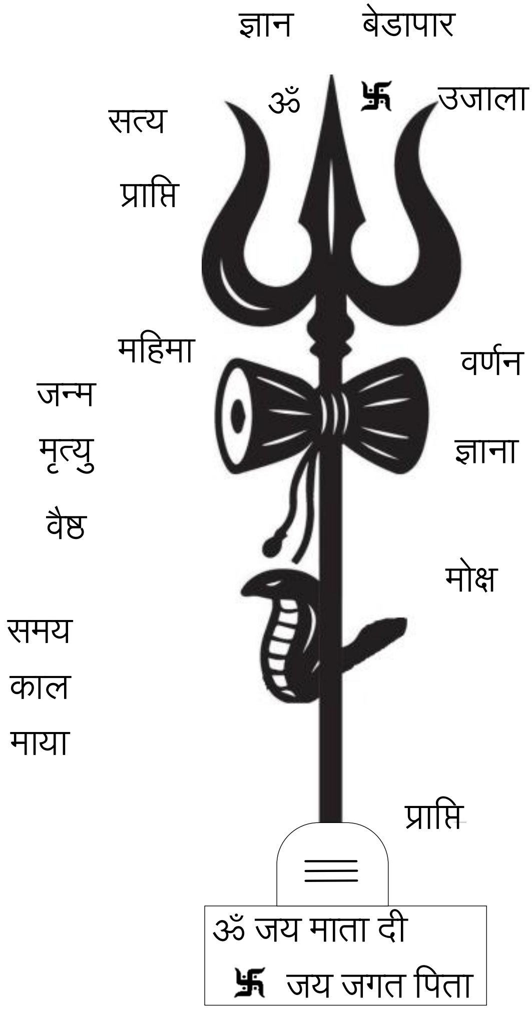
ज्ञान
बेडापार
ॐ
卐
उजाला
सत्य
प्राप्ति
महिमा
वर्णन
जन्म
मृत्यु
ज्ञाना
वैष्ठ
मोक्ष
समय
काल
माया
प्राप्ति
≡
ॐ जय माता दी
卐 जय जगत पिता